ग़ज़ल 11

-रविशंकर श्रीवास्तव

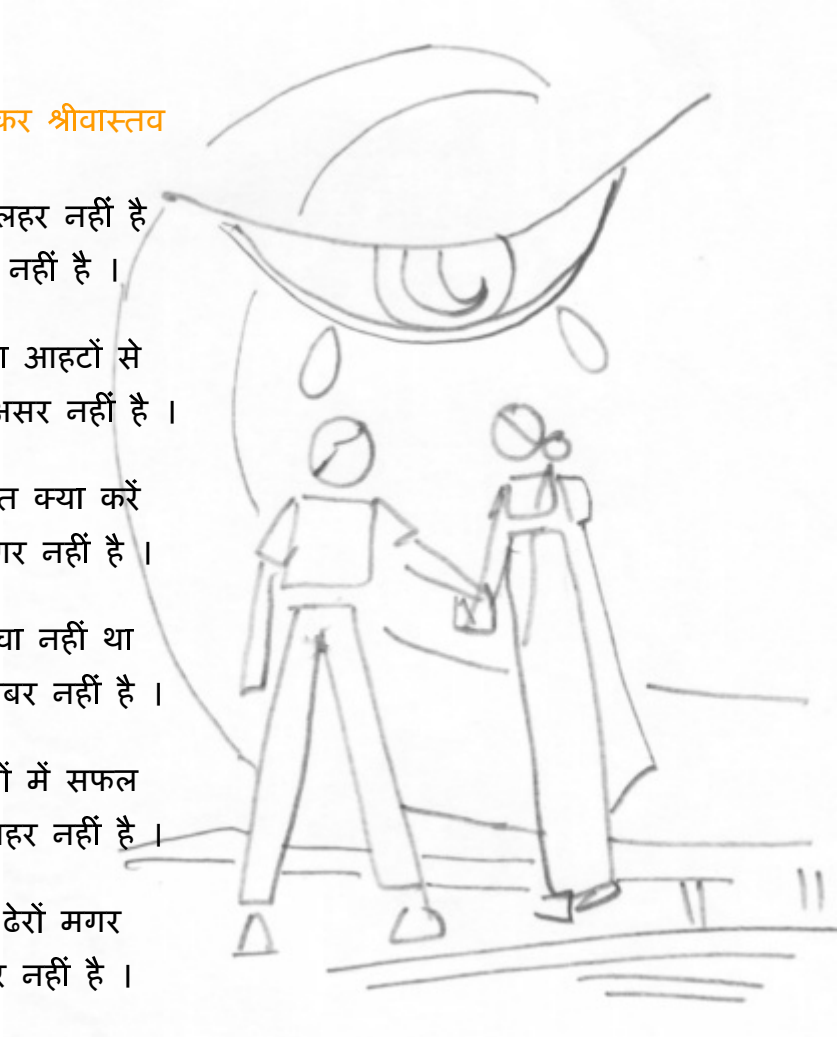

तेरी मुहब्बत में कोई लहर नहीं है
चलो कोई बात मगर नहीं है ।

ये रास्ता तो थर्राता था आहटों से
चीखों का कोई खास असर नहीं है ।

किए तो थे वादे इफ़रात क्या करें
इनमें से कोई याद अगर नहीं है ।

तेरे बगैर जीने को सोचा नहीं था
जमाने से तेरी कोई खबर नहीं है ।

तुझे भूलने की कोशिशों में सफल
याद ऐसी कोई शाम-सहर नहीं है ।

तूने खाई होंगी कसमें ढेरों मगर
कोशिशों में खास क़सर नहीं है ।

वो तो वादा निभाकर भी दिखाते
अफसोस कोई पास ज़हर नहीं है ।

दीवानों की भीड़ में पहचानें जिसे
रवि वैसा कोई नाम नज़र नहीं है ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001